IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

यमुना शिवाजी यरोळकर
शोधछात्रा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
yamuna.yarolkar11@gmail.com

सारांश : *हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना का विकास प्राचीन काल से आधुनिक युग तक निरंतर रूप से होता रहा है। 'पर्यावरण' मानव जीवन का अभिन्न अंग है, जिसके बिना जीवन की कल्पना अधूरी है।यह शोध पत्र हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में पर्यावरण चेतना की निरंतरता को दर्शाता है।आदिकाल में वीरगाथाओं के माध्यम से नदियाँ, वन और पर्वत काव्य का विषय बने। भक्तिकाल में कबीर, सूर,तुलसी ने जल, वृक्ष और भूमि को आध्यात्मिकता से जोड़कर काव्य की सृष्टि की। रीतिकाल में प्रकृति का उपयोग मुख्यतः श्रृंगारिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया। आधुनिक काल में भारतेंदु एवं द्विवेदी युग में प्रकृति को यथार्थवादी रूप से चित्रित किया दिखाई देता है।छायावाद में प्रकृति और मानव के अंतःसंबंध को भावनात्मक एवं आध्यात्मिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा जैसे कवियों ने प्रकृति को आत्मानुभूति का माध्यम बनाया। प्रगतिवाद और नई कविता के दौर में पर्यावरण चेतना अधिक सामाजिक और वैज्ञानिक रूप में उभरती है। इस काल के कवियों ने औद्योगीकरण, प्रदूषण, जल-संकट और पर्यावरण विनाश जैसी समस्याओं को उजागर किया है। नागार्जुन, दिनकर और समकालीन कवियों ने पर्यावरण संकट को जन-जीवन से जोड़कर प्रस्तुत किया है।इससे स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य ने केवल प्रकृति का सौंदर्य चित्रण ही नहीं किया, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज को जागरूक करने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया है।*
प्रस्तुत शोधपत्र हिंदी साहित्य किस प्रकार 'पर्यावरण संरक्षण' का प्रभावी माध्यम है यह बताते हुए सामाजिक उत्तरदायित्व को रेखांकित करता है।

कुंजी शब्द: हिंदी साहित्य, पर्यावरण चेतना, प्रकृति चित्रण, सामाजिक जागरूकता, मानव-प्रकृति संबंध

I. प्रस्तावना:

'पर्यावरण' शब्द का निर्माण दो शब्दों के मेल से हुआ है। 'परि' और 'आवरण' अर्थात हमें चारों ओर से घिरा हुआ आवरण। भूगोल एवं परिस्थितिकी में यह शब्द अंग्रेजी के Environment के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है। पर्यावरण का मानव से घनिष्ठ संबंध है इसके बिना मानव जीवन का सच्चा आनंद प्राप्त नहीं कर सकता।

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना का विकास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक अनवरत चला आ रहा है। प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक कविताओं तक प्रकृति का चित्रण मानव जीवन से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है।वेदों - पुराणों में प्रकृति वंदना से शुरू होकर समकालीन साहित्य में औद्योगीकरण व शहरीकरण के कारण हो रहे विनाश के विरोध में कई लेखकों, कवियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। पर्यावरण संरक्षण, पानी का महत्व, जल, जमीन, वायु, पेड़, नदियां, तालाब, समुद्र आदि विषयों से समाज में जागरूकता लाने का प्रयास साहित्यकारों ने किया है।

हिंदी साहित्य के हर काल में पर्यावरण चेतना के सिद्धांत दिखाई देते हैं। आदिकाल के वीरगाथाकालीन रासो काव्यों जैसे चंदबरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' में प्रकृति का वर्णन वीर रस की पृष्ठभूमि में हुआ है, जहाँ नदियाँ, वन, पर्वत आदि युद्ध और यात्रा के संदर्भ में जीवंत चित्रण हैं। तथा वीर काव्यों में ग्राम्य जीवन और मिट्टी-अनाज का उल्लेख मानव-प्रकृति एकरूपता को दिखाता है। चंदबरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' में प्रकृति चित्रण मुख्य रूप से रेवा तट (नर्मदा तट) के वर्णन में बहुत सुन्दर उदाहरण मिलता है।

"रेवा तट पर बड़े⍰बड़े दाँतों वाले हाथी, मार्ग में घूमते सिंह, पहाड़ों पर उड़ते कबूतर और अन्य पक्षी, साथ ही कस्तूरी मृग आदि का चित्रण" १

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-37516

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

यह वर्णन 'पृथ्वीराज रासो' में रेवा तट प्रसंग में आता है, जहाँ चंदबरदाई ने नर्मदा के घाट, वन, जंगली जानवरों और आकाश मंडल की बहुत ही मनोहर प्राकृतिक छवि को चित्रित करता दिखाई देता है। इसी काल में मैथिल-कोकिल विद्यापति रचित 'पदावली' प्रकृति वर्णन की दृष्टि से अद्वितीय है। ऋतुराज वसन्त का स्वागत किसी राजा के आगमन पर उल्लसित वातावरण के समान प्रदर्शित किया गया है, यह प्रकृति के प्रति ममत्व का निदर्षन है-

"आएल रितुपति राज बसंत, धाओल अलिकुल माधवि-पंथ।
दिनकर किरन भेल पौगंड, केसर कुसुम धएल हेमदंड।
नृप-आसन नव पीठल पात, काँचन कुसुम छत्र धरू माथ।
मौलि रसाल-मुकुल भेल ताब, समुखहि कोकिल पंचम गाय।।" २

कवि, साहित्यकारों की यह चेतना आदिकाल से ही साहित्य में विद्यमान रही। इससे हिंदी साहित्य की पर्यावरणीय परंपरा की नींव मिलती है जो हमें प्रकृति के प्रति विचार करने के लिए जागरुक करती हैं। भक्तिकाल में पर्यावरण चेतना प्रकृति को ईश्वर की सृष्टि मानकर उसके संरक्षण और सह-अस्तित्व की भावना के रूप में व्यक्त हुई है। संत कबीर दास, महाकवि तुलसीदास, सूरदास, जायसी, रहीम सभी के पदों में पर्यावरण के विषय में चेतन दिखाई देती है।
संत कबीर पानी, पेड़ पौधे, वर्षा, भूमि आदि को ईश्वर की देन मानकर उसकी अनदेखी न करने और उपयोग में संयम रखने का संदेश देते हैं। कबीर के दोहों में जल और वृक्ष/पेड़ पौधे केवल प्राकृतिक तत्व नहीं, बल्कि दार्शनिक प्रतीक के रूप में काम करते हैं। यथा -

"जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जल ही समाया, यही तथ्य कथ्यो ज्ञानी।" ३

यहाँ कुंभ और जल का द्वंद्व ईश्वर और जीव, आत्मा और परमात्मा के मिलन के रूपक में दिखाया है। जैसे कुंभ टूटने पर जल जल में ही लीन हो जाता है, वैसे ही जब जीव का अहंकार टूटता है तो वह परमात्मा में लीन हो जाता है। संत कबीर के दोहे पर्यावरण संवेदना और आध्यात्मिक शुद्धि दोनों से जुड़े हैं, जो मनुष्य को पर्यावरण के प्रति जागरुक करते हैं।
गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में लक्ष्मण और सीता को वृक्षारोपण करते हुए दिखाया है, यथा-

' 'तुलसी तरुवर विविध सुहाए।
कहुँ-कहुँ सिय, कहुँ लखन लगाए।' ' ४

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा वृक्षारोपण को एक स्वाभाविक कार्य बताया गया है। हर व्यक्ति को स्वप्रेरणा से ही, जहाँ भी जैसे भी सम्भव हो, वृक्षारोपण कार्य करते रहना चाहिये। गोस्वामी तुलसीदास जी का एक और उदाहरण द्रष्टव्य है-

"रीझि खीझि गुरुदेव सिख सखा सुसाहित साधु।
तोरि खाहु फल होइ भलु तरु काटे अपराध।।" ५

पर्यावरण संरक्षण को महत्व देते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी का मानना है कि वृक्ष से फल तोड़कर खाना तो उचित है किंतु वृक्ष को काटना अपराध है।
'सूरसागर' में सूरदास ने कृष्ण-लीलाओं के बीच वृंदावन के उपवन, नदी और पशु-पक्षियों का वर्णन प्रकृति को भगवान का स्वरूप बनाता है। यहां बादल, कुंज, भौंरे, कलि सभी तत्व प्रकृति की सौंदर्य पूर्ण और भक्तिपूर्ण रचना में सहयोगी बनते है। इसी प्रकार मीराबाई, रसखान आदि भक्त कवियों ने प्रकृति को अपने काव्य का विषय बनाया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

रीतिकालीन कवियों ने प्रकृति का चित्रण स्वतंत्र रूप में न कर श्रृंगारिक भावनाओं को सजीव बनाने के लिए किया है। इस काल में केशव, बिहारी, देव, सेनापति आदि ने युग प्रकृति के सुन्दर चित्र चित्रित किए हैं। बिहारी का प्रकृति चित्रण का एक दोहा-

'निस दिन बरसत नयना हमारे, भये सराय जुबैर।
नीर भरैं चंचल चितवा, जात न आवत ठौर।" ६

यहां बिहारी जी ने प्रेम विरह की पीड़ा को आंखों के आंसुओं से जोड़कर जल की निरंतर धारा से तुलना की है। इस प्रकार देव, मतिराम आदि कवियों ने प्रकृति का वर्णन सौंदर्य के साथ जोड़कर किया है।

आधुनिक काव्य का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के आविर्भाव से माना जाता है। इस युग में प्रकृति चित्रण प्रधानतः परम्परागत रूप में उपलब्ध होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ठाकुर जगमोहनसिंह, अंबिकादत्त व्यास आदि कवियों ने कुछ आधुनिक ढंग की प्रकृति-चित्रण सम्बन्धी कविताएँ लिखी हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने प्रकृति को मानव हृदय के आलंबन के रूप में चित्रित किया, जैसे यमुना तट के वृक्षों का वर्णन। ठाकुर जगमोहन सिंह ने विंध्य प्रदेश की प्रकृति का उत्कृष्ट वर्णन,अंबिकादत्त व्यास ने 'पावस पचासा' में वर्षा ऋतु का आलंबनगत चित्रण आदि।

द्विवेदीयुग में अयोध्यासिंह उपाध्याय तथा मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्यों तथा अन्य काव्यकृतियों में भी प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते है। मैथिलीशरण गुप्त जी की 'साकेत', 'पंचवटी' और 'यशोधरा' आदि कृतियों में भी प्रकृति के कई भव्य चित्र हैं। द्विवेदी युग में प्रकृति को देखने का नजरिया हरिऔध जी के इस काव्य से परिवर्तित होता दिखाई देता है। जो पर्यावरण चेतना का उत्तरोत्तर विकास दिखाता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।।
तरु-शिखा पर थी अब राजती।
कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।।" 7

छायावाद को प्रकृति-काव्य भी कहा जाता है। छायावादी कवियों ने मनुष्य-प्रकृति के अंतरसंबंध को वैदिक और भक्ति परंपराओं से जोड़कर पारिस्थितिक संतुलन बनाया है। जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ आँसू, झरना, लहर, कानन कुसुम, कामायनी आदि में प्रकृति का परस्पर सम्बन्ध दर्शाया गया है। प्रसाद जी ने अपने अधिकतर काव्यों में प्रकृतिपरक रचनाओं के माध्यम से मानव जीवन में पर्यावरण का पारस्परिक सम्बन्ध एवं महत्त्व दर्शाया है तथा पर्यावरण के प्रति जन -जागृति लाने का अथक प्रयास किया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"देखे मैंने वे शैल श्रृंग,
जो अचल हिमानी से रंजित, उन्मुक्त, उपेक्षा भरे तुंग
अपने जड़ गौरव के प्रतीक वसुधा का कर अभिमान भंग।
अपनी समाधि में रहे सुखी बह जाती हैं नदियाँ अबोध
कुछ श्वेत बिन्दु उसके लेकर वह स्तिभित नयन गत शोक क्रोध
स्थिर मुक्ति, प्रतिष्ठा में वैसी चाहता नहीं इस जीवन की
मैं तो अबाध गति मरूत सदृश हूँ चाह रहा अपने मन की
जो चूम चला जाता अग जग प्रति पग में कंपन की तंरग
वह ज्वलनशील गतिमय पतंगा।" 8

जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' के काव्य 'इड़ा' की इन पंक्तियों में मानव जीवन की निराशा एवं पर्यावरण के महत्त्व को दर्शाया है। अत: हमें इससे यह समझ आता है कि पर्यावरण का संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति चित्रण छायावादी भाव संवेदना और अध्यात्मिकता दोनों के माध्यम से उभरता है। उन्होंने प्रकृति को केवल बाह्य दृश्य नहीं, बल्कि आत्मा वेदना, विरह और दिव्य संबंध का प्रतीक बनाया है।

"धीरे धीरे उत्तर से आती है बसंत रजनी,
तारकमय नव वेनी बंधन,
शीर्ष पर फूलकर शशि का नूतन रश्मि विलय…" ९

यहाँ बसंत रात को मानव आत्मा की विरह वेदना और आध्यात्मिक चेतना उत्थान के रूप में चित्रित किया गया है। यहां चंद्रमा, तारा, शीतल वायु आदि भाव संवेदना के रूप में चित्रण है। बाहर सुंदर शांत बसंत रात है, अंदर विरह पीड़ा है—दोनों एक दूसरे के आधार और प्रतिबिंब बन जाते हैं। इस प्रकार हिन्दी के कवियों ने प्रकृति को अनेक रूपों में चित्रित किया है।
छायावाद के उपरांत प्रगतिवाद और नई कविता ने भी इस चेतना को प्रमुखता से चित्रित किया है। इन दोनों में पर्यावरण चेतना सामाजिक यथार्थवाद, जन-चेतना, जीवन संघर्ष के अंतर्गत विकसित होती है। इस दौर के कवियों ने प्रकृति को सामाजिक न्याय, गरिबी, शोषण, राजनीतिक विडंबना आदि पर्यावरणीय संकटों से जोडा है। कवि नागार्जुन-

"बादल घिरा आया, फिर भी वर्षा नहीं आई,
वही बादल अब धूल के आकाश में ढूंढ रहा है अपने जल स्वरूप को।" १०

यहाँ बादल और वर्षा को विकृत मौसम चक्र के प्रतीक के रूप में दिखाया गया है। वर्षा के अभाव के कारण आज कल जल संकट जैसी समस्याएं बड़ी मात्रा में उत्पन्न हो रही है। इन पंक्तियों में पर्यावरण विकृति को वैज्ञानिक यथार्थ और भाव विलाप दोनों के रूप में चित्रित किया गया है।
रामधारी सिंह दिनकर-

"अरे इस धरती की खाद न लूटो, यही तो तुम्हारा घर और घाट है;
इसी में उगती हैं फसलें, इसी में बहती हैं नदियाँ,
इसी में जनता की आँखें दीप्त होती हैं।" ११

यहाँ धरती, खेत, नदियाँ सब एक ही राष्ट्रीय चेतना का अंग बनती हैं; इनका शोषण राष्ट्र विनाश के समान है, जो प्रगतिवादी दृष्टि का विशिष्ट रंग है। इन पंक्तियों से पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र निर्माण दोनों के प्रति जागरूक किया है।
समकालीन हिंदी कवियों में त्रिलोचन, रामदरश मिश्र, केदारनाथ सिंह, अरुण कमल, अशोक वाजपेई, ज्ञानेंद्रपति, लीलाधर जगुड़ी, किशोरी लाल व्यास आदि कवियों के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं। इन्होंने पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को अपने काव्य का विषय बनाया। 'ज्ञानेंद्रपति' जी की कविता "नदी और साबुन" में नदी के प्रति चिंता दिखती है-

"नदी!
तू इतनी दुबली क्यों है?
और मैली कुचली…
मरी हुई इच्छाओं की तरह मछलियां क्यों उतराई है?
तुम्हारी दुर्दिन के दुर्जल में,
किसने तुम्हारा नीर हरा,
कल कल में कलुष भरा।
बाघों के झूठारने से तो
कभी दुषित नहीं हुआ तुम्हारा जल…
आह! लेकिन स्वार्थी कारखानों का तेजी पेशाब झेलते

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

बैंगनी हो गई तुम्हारी त्वचा
हिमालय के होते भी तुम्हारे सिरहाने
हथेली भर का एक साबुन की टिकिया से
हार गई तुम युद्ध”

कवि ने इस कविता के माध्यम से दिखाया है कि नदियों की स्वच्छता एवं पवित्रता नष्ट हो गई है। कवि की रुष्टता इस कविता में दिखाई देती है। वह नाराज होकर पूछता है कि किसने नदी के पवित्र जल को मलिन किया? इस प्रकार समकालीन दौर का पर्यावरण साहित्य आज के बढ़ते तकनीकी एवं औद्योगीकरण के जीवन में प्रकृति के प्रति कवियों की सजगता तो दिखता ही है, साथ ही अपने साहित्य के माध्यम से पर्यावरण संबंधी ज्वलंत समस्याएं उठाकर अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में जागरूकता लाने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष-

इस प्रकार हिंदी साहित्य में पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं में प्रकृति के सौंदर्य चित्रण व मानवीकरण से लेकर पर्यावरण प्रदूषण जैसे अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं पर चिंतन किया गया है। साहित्य में यह चेतना संस्कृत वैदिक भक्ति संत साहित्य से लेकर छायावाद, प्रगतिवाद, नई कविता और आज की समकालीन हिंदी साहित्य तक धीरे धीरे और गहराई से उभरती रही है। छायावाद में यह मुख्यतः भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप में प्रकट हुई। प्रगतिवादी काव्य ने खेत नदी मिट्टी को जन जीवन का आधार मानकर पर्यावरण संरक्षण को सामाजिक न्याय दिया। नई कविता और समकालीन हिंदी साहित्य में यह चेतना वैज्ञानिक यथार्थवादी होकर जैव विविधता, वायु प्रदूषण, जल संकट, वृक्ष हत्या जैसे विषयों से जुड़ी रही। इस प्रकार हिंदी कवियों व साहित्यकारों ने अपने अधिकांश काव्य व साहित्य में प्रकृति के महत्व को दर्शाते हुए पर्यावरण के गूढ़ रहस्यो एवं तथ्यों को उद्घाटित कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागृति लाने का बहुमोल कार्य किया है।

संदर्भ सूची-

१. चंदबरदाई, पृथ्वीराज रासो: रेवातट सर्ग- २७
२. विद्यापति, विद्यापति पदावली
३. कबीरदास, संत कबीर ग्रंथावली, संपादक: मतिराम त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, २००५, पृष्ठ.१४२
४. गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, अयोध्या कांड, गीता प्रेस, गोरखपुर
५. तुलसीदास, दोहवली, गीता प्रेस, गोरखपुर, १९९५
६. सूरदास, सूरसागर, संपादक: नंददुलारे वाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
७. हरिऔध, प्रियप्रवास, 'भारत-भारती' ग्रंथमाला, सं. भारतीय ज्ञानपीठ, प्रयाग, २००५. सर्ग, पृष्ठ.१२-१३
८. प्रसाद जयशंकर, कामायनी, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रयाग, २०२०, नवम सर्ग 'इड़ा' पृष्ठ २४५-२४६
९. महादेवी वर्मा "धीरे-धीरे उतर क्षितिज से”, नीहार, भारतीय ज्ञानपीठ, २०१५, पृष्ठ ४५-४६
१०. नागार्जुन, "बादल को घिरते देखा है", भूखमरी के बादल. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, १९८५, पृष्ठ २३-२५.
११. अग्रवाल केदारनाथ, "यह धरती है उस किसान की." अग्निपथ, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रयाग, १९८५, पृष्ठ ६७-६८.
१२. ज्ञानेन्द्रपति, "नदी!" गंगातट, प्रगतिशील प्रकाशन, मात्रा काशी

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-37516